ISSN No. 2394-9996

अफ्रीका महाद्वीप का कथा - साहित्य

डॉ. अलका श्री. डांगे
सहा. प्राध्यापक
सरस्वती महाविद्यालय, केज, जि. बीड.

अंग्रेजी शब्द `ऐफ्रिका` से अफ्रीका शब्द बना है। यह एक ऐसे महाद्वीप का नाम है जिसका क्षेत्र भारत से नौ गुणा बड़ा है। इसमें केनिन, घाणा, ट्रन्सवाल, दक्षिण अफ्रीका, सेनेगल, नाईजेरिया, कांगो, बोत्सवाना, सिरालियोन, सुड़ान आदि देशों के लेखकों का साहित्य प्रकाशित हुआ है। इस महाद्वीप में बुग मैन, बांटू सुडान तथा सामी-हामी परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं। सूड़ान परिवार की सिर्फ छ:भाषाएँ ही ऐसी हैं जो लिपिबद्ध की जा सकती है। नूबी भाषा में चौथी से सातवीं सदी के कोटती लिपि में लिखे लेख मिलते हैं। सारे उत्तरी अफ्रीका में अरबी का बोलबाला है। फिर भी `खमीर`, `सोमाली`, `लीबी` मिश्री भाषा कई स्थानों पर पायी जाती हैं। दक्षिण अफ्रीका में द्वितीय महायुद्ध के बाद में काव्य का सृजन हुआ हैं। उस युग के कवियों मे एलिझाबेथ `आयबर्स` तथा `डिक ऑफर मॅन` काफी लोकप्रिय रहे हैं। इन कवियों का झुकाव अध्यात्म की ओर अधिक था। कहानी तथा उपन्यासों में अफ्रीकी जिन्दगी के विविध रंग प्रस्तुत हुए हैं। उसमें अधिकतर श्वेत-अश्वेत का संघर्ष विशेष रूप से चित्रित हुआ है। क्रांतिकारी लेखकों में केन्याता लंथुजी, नेल्सन मंडेला के साथ-साथ न्यूगी उस्मान आदि का योगदान भी कम नहीं हैं। लड़ाई निरंतर जारी है। लड़ाई का एक महत्वपूर्ण भाग वे लेखक हैं जो निष्कासित होकर भी अपनी कलम से गुरिल्ला युद्ध में रत हैं। इसलिए अधिकांश कथा-साहित्य में त्रासदि का चित्रण अधिक पाया जाता है। रंगभेद की इसी नीति के कारण अलैक्स लायुमा के `स्टोन कंट्री`, `टाईम फार बुचरवर्ड` आदि रचनाओं पर बैन लगाया था। गॉडिर्मर की कई रचनाएँ पुरस्कृत हुयी हैं। उनमें `द बिलेवड कंट्री`, `गो होम` काफी चर्चित रहीं। अहमद इसद की `हाजीमूसा एण्ड अदर स्टोरीज काफी लोकप्रिय हुई।`

नीग्रो साहित्य उन लोगों का साहित्य हैं जिन्हें अफ्रीका से ले जाकर अमेरिका में बेचा गया। काली चमड़ी के कारण उन्हें जानवरों से बदत्तर जिंदगी जीने के लिए मजबूर किया गया। फिलिस विटली नामक कवयित्री ने अपनी कविताओं में पहली बार उनकी पीड़ा को, दु:खद जीवन को, मृत्यु के आकर्षण को

चित्रित किया हैं। चेस्टर के `द हाऊस बिहाइड दे सेडर्स` द्वारा विद्रोही साहित्य का आरंभ हुआ। न्यूयार्क, शिकागो आदि शहरों की झुग्गी झोपड़ियों की जिन्दगी.

पहली बार लेखकों ने दुनिया के सामने लायी। जीन टूमर ने `केन` नामक कथा - संग्रह द्वारा नीग्रों के प्रश्नों को विश्व के सम्मुख रखा। रिचर्ड राइट का `नेटिव सन्` तथा `ब्लॅक बॉय` उपन्यासों द्वारा नीग्रो विद्रोही साहित्य का आरंभ हुआ। सन 1945 में प्रकाशित उक्त ग्रंथें के बाद सन 1952 में एलिसन का प्रकाशित उपन्यास `इनविजिबल मॅन` नीग्रो पर ही आधारित था, जिसे नॅशनल बुक अवार्ड मिला।

बॉल्डविन का `नो बडी नोज माय नेम` एलिझा महंमद का `ब्लॅक मुस्लिम` तथा `मदर कंट्री` जैसी रचनाओं ने तो तहलका मचा दिया। मार्टिन ल्युथर किंग की हत्या के बाद बॉबी सील ने `ब्लॅक पॅथर` नामक आक्रमक संस्था की स्थापना कर `ब्लॅक इन व्युटिफूल` के नारे दिये। उसके बाद `ब्लॅक लिटरेचेर`, `ब्लॅक थिएटर`, `ब्लॅक पोएट्री` आदि नाम साहित्य में प्रचलित हो गये। नीग्रो कवियों ने अपनी कविता की भाषा सड़क छाप टाइप की ली परन्तु विचार क्रांतिकारी अपनाए। अपनी अंग्रेजी को उन्होंने `ब्लॅक इंग्लिश` कहकर संबोधित किया। नीग्रो नाटककारों में ली रॉय जोन्स का नाम विशेष उल्लेखनीय है जिसने `द स्लेव`, `ओरीजनल सिन` तथा `टॉयलेट` लिखे। `टॉयलेट` मे श्वेत और अश्वेत बच्चों के बीच की समलैंगिकता का नग्नवर्णन किया हैं। `रोज कल्चर` में वेश्या और दलालों पर तो `जंटलमन कॉलर` में अमरिका के खोखले जीवन पर प्रकाश ड़ाला हैं। नीग्रो साहित्य को विश्वसाहित्य में मान्यता तो मिली परतु द्वेष की स्थिति से वे उबार नहीं पाये। अभी भी अधिकांश अफ्रीकी देशों की राजभाषा अंग्रेजी या फ्रेंच ही हैं।

अफ्रीकी देशों की कुछ कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात जो तथ्य सामने आये हैं उसे हम संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। दख्खिण अफ्रीका के लेखक `अलेक्स ला गुमा` की एक कहानी हैं `कॉफी के लिए` एक प्याला कॉफी के लिए नीग्रो लोगों को अपने ही देश में तरसना पड़ता हैं। वे काले है इसलिए अपनी कमायी से न वे कार खरीद सकते है और न सूट पहन सकते हैं। कथा नायिका को कॉफी हाऊस की श्वेत महिला ने जब कॉफी देने से इन्कार कर दिया तब उसने थर्मस फेंककर उस पर वार किया था। `काली लड़की`, ``भूरासूट और धूप-रेब्फ``[1] पहने हुए` इतने से वर्णन के आधार पर पुलिस उन्हें हिरासत में लेती हैं। इससे बड़ा अन्याय और क्या हो सकता है।

ट्रांसवाल देश के लेखक है कन टैम्बा। उनकी प्रसिद्ध कहानी है `सेफिया टाऊन: प्रेत छायाओं का शहर` में उन्होंने बताया कि गोरे लोग काली औरतों से प्यार कर सकते हैं पर काले नहीं। यदि कोई अश्वेत श्वेत औरत के बिस्तर में पाया

गया तो उसे छः महिने से सात साल की जेल हो सकती है।[2] काली औरतें गोरे लोगों को अपना बनाने के लिए सारा वक्त अपना रंग गोरा करने, अपने बाल सीधे करने तथा कुल्हे पतले करने में लगी रहती हैं। इस कहानी के नायक ने जब श्वेत महिला के साथ शयन किया जब उसे ऐसा लगा जैसे वह क्रीम के उपर चाकलेट है। हर कोई उससे गोरी औरत का स्वाद पूछता था। उसने यह कार्य सिर्फ बदला लेने के लिए किया था।

`घाना` देश के एडिलेड के साली हेफर्ड की प्रसिद्ध कहानी है `मिस्ता कुरिअर`। इसमें उन्होंने श्वेत संस्कृति के खिलाफ युवा विद्रोह को आश्रय दिया है। वे अपने पुत्र को अंग्रेजी की पोशाख पहनाते थे और चाहते थे कि वह एक अफसर बने। परन्तु वह नहीं बनता और अंत में पोशाख को फेंककर अपने कबीले के वस्त्र पहनता है।

रिचर्डरिव की एक कहानी है `बेंच`। ये उस काल की याद दिलाती है जब गांधीजी को प्रथम श्रेणी में यात्रा करने से अंग्रेजों ने रोका था। उस समय न काला आदमी किसी सिनेमा घर में जा सकता था न रेस्त्रां मे खाना खा सकता था। कालों ने इसके विरूद्ध विद्रोह करने की ठानी। वह `रेल्वे के उस बेंच पर जाकर बैठ गया जिस पर लिखा था केवल युरोपियन के लिए।`

``व्यवस्था की तमामा बुराईयों की जड़ जो आज तक वह देख पाया था, उसे उस बेंच में दिखाई पड़ी। उसके और पूरे मानव समाज के बीच यही बेंच दीवार बनकर खड़ी थी।``[4] कई गोरे पुलिस की सहायता से उसे पीटते है। लहूलुहान होने पर भी वह शान से चलता है। उसे अपने विद्रोह पर गर्व था।

नाईजेरिया देश के मेबेल सेगुन की `प्रीति भोज` कहानी पिछड़े समाज की बर्बरता का प्रतीक है। अप्रतीक सुन्दर नायिका को उसका पति अपवित्रता के आधार पर छोड़ देता है तब एक कुरूप आदमी उसे अपनाता है। कुछ समय बाद उसकी जिन्दगी में एक खूबसूरत नौजवान आता है। दूसरा पति ईर्ष्या से इतना जल उठता है कि उसकी हत्या कर उसका मांस खाया है।[5] अपने प्रेमी के कटे हुए सिर को देखकर सुन्दर नारी जिन्दगी भर तिल-तिलकर जलती रही। दुनिया के किसी भी देश में ऐसी क्रूरतापूर्ण कहानी पढ़ने को नहीं मिलेगी।

सिरालियोन देश के ऐल्डर ज्यूरोसिमा जोन्स उन कथाकारों में से एक है जिनकी सहानुभूति ``शोषित वर्ग के साथ हैं। उनकी कहानी `प्रयास` में उन श्वेत सम्बन्ध बनाता है और जैसे प्रांत की अफ्रीकन औरत के साथ सम्बन्ध बनाता है और जैसे ही तबादला हो गया, छोड़कर जाता है। `कभी अपने ह्रदय को किसी भी औरत से बंधने ने दो और कभी एक ही स्त्री के साथ दूसरे प्रांत में मत जाओ।``[6] उसे पक्का मालूम है कि उसके जाते ही वह अपने ही देश के आदमी से विवाह

कर लेगी परन्तु हर नारी के साथ ऐसा नहीं होता। प्रथम प्यार की याद तो आती हैं। मन तुलना कर उठता हैं। यह कहानी मानवीय रिश्तों के कई उलझे पहलुओं को उजागर करती हैं।

सुडान देश के `तईब सालेह` उन कथाकारों में से है जिन्होंने वर्ग चेतना को लेकर कहानियाँ लिखी है। उनकी प्रसिद्ध कहानी है `मुट्ठीभर खजूरें`। इस कहानी के पात्र मसऊद ने नब्बे शादियाँ की और हर शादी के लिए वह जमीन बेचता रहा। परन्तु प्रकृति से उसे बेहद प्यार था। जब बालक खजूर के पेड़ पर प्रहार कर रहा था तब उसने कहा था - ``देखों खजूर वह खा नही ंसकता। कारण वे गिरवी रखे थे।``[7]

संदर्भ सूची :

1) अलेक्स ला गुमा - कॉफी के लिए, अनु. सु. खोत. सारिका, जनवरी 73,

2) कैन-टेम्बा सेफिया टाऊन : प्रेत छायाओं का शहर, अनु. नारंग - पसंद,

3) कैन टेम्बा - सोफिया टाऊन - अपनी - अपनी तथा दक्षिण अफ्रीकी कहानियाँ, पृ. 73.

4) रिचर्ड खि-बेंच - रुपांतर राजहंस - पहला अंक 41, पृ. 104

5) मेबेल सेगुन - प्रीतिभोज - अनु. रायजादा - सरिका, जनवरी 73. पृ. 15

6) ऐल्डर ज्युरो सिमोजोन्स - अनु. रायजादा - सारिका, जनवरी 73. पृ. 68

7) तईब सालेह - मुट्ठी भर खजूरे - अनु. सुरजीत - सारिका, जनवरी 73.

☆☆☆